रामलला-नहछू

सोहर छंद

आदि सारदा गनपति गौरि मनाइय हो।
रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो॥
जेहि गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो।
कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो॥ १॥
कोटिन्ह बाजन बाजहिं दसरथ के गृह हो।
देवलोक सब देखहिं आनँद अति हिय हो॥
नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो।
कौसल्या के हर्ष न हृदय समातै हो॥ २॥
आले हि बाँस के माँड़व मनिगन पूरन हो।
मोतिन्ह झालरि लागि चहूँ दिसि झूलन हो॥
गंगाजल कर कलस तौ तुरित मँगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो॥ ३॥
गजमुकुता हीरामनि चौक पुराइय हो।
देइ सुअरघ राम कहँ लेइ बैठाइय हो॥
कनकखंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासन हो। ॥ १७
मानिकदीप बराय बैठि तेहि आसन हो॥ ४
बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हे
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो हो।
अहिरिनि हाथ दहेँड़ि सगुन लेइ आवइ । १८।
उनरत जोबनु देखि नृपति मन भावइ हे